19

आशीष वचनः मेल और शान्ति की आशीष

(6:21-24)

इफिसियों के नाम अपने पत्र का आरम्भ करते हुए पौलुस ने फोक्स कलीसिया की महान सच्चाइयों पर रखा। उसने दिखाया कि मनुष्यजाति को मसीह में जहां हर प्रकार की आत्मिक आशिषें पाई जाती हैं, लाने के लिए परमेश्वर ने इतिहास में इस प्रकार काम किया। विश्वासी लोग कलीसिया का भाग बनने के द्वारा परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के साथ सम्बन्ध में आते हैं (1:1-23)। अपने आपको बचाने के लिए मनुष्य चाहे असहाय और आशाहीन था परन्तु परमेश्वर ने अपनी दया और प्रेम और अनुग्रह के कारण मनुष्य को अपने साथ मिलाने के लिए क्रूस पर अपने पुत्र को मरने के लिए दे दिया। जो लोग उद्धार के परमेश्वर के दान को स्वीकार करते हैं वे परमेश्वर के परिवार, उसके राज्य और उसके आत्मिक भवन में हैं (2:1-22); वे मसीह की देह अर्थात कलीसिया के लोग हैं। यह सब कुछ ''मसीह में'' सम्भव होता है। पौलुस ने गलातियों 3:26, 27 और रोमियों 6:3, 4 जैसे वचनों में समझाया कि कोई व्यक्ति मसीह में कैसे आता है।

परमेश्वर ने एक ''भेद'' को प्रकट कर दिया जो युगों से मनुष्य को बताया नहीं गया था। पौलुस और कलीसिया की चुनौती सब लोगों को परमेश्वर की बड़ी मंशा को समझाने की थी। संदेश की मुख्य बात यह थी कि यहूदियों के साथ-साथ अन्यजाति भी कलीसिया का भाग बन सकते थे। पौलुस ने इस भेद के खोले जाने के इसके कार्य को पूरा करने में कलीसिया की सामर्थ और समझ के लिए प्रार्थना की (3:1-21)।

पत्र के पहले भाग में इफिसियों के सामने इन महान सच्चाइयों को साबित करते हुए पौलुस ने दूसरे भाग का इस्तेमाल उनके जीवनों के लिए इन सच्चाइयों की व्यावहारिक प्रासंगिकता बनाने के लिए किया। (1) उसने उन्हें अपने, परमेश्वर के, दूसरों के और वचन के प्रति सही व्यवहार अपनाते हुए और नया मनुष्यत्व पहनकर ''[अपने] बुलाए जाने के योग्य चाल'' चलने के लिए प्रोत्साहित किया। योग्य चाल चलने में उन्हें मसीह में एक होने के योग्य बना देना था (4:1-32)। (2) उसने उन्हें ''प्रेम में चलने'' को कहा। प्रेम में चलते हुए उन्होंने परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करना था। (3) अंधकार के बुरे कामों का सामना करते हुए उन्हें ''ज्योति की संतान की नाईं चलना'' था (5:1-14)। (4) उसने उन्हें आत्मा से परिपूर्ण होकर, सब सम्बन्धों में एक दूसरे के प्रति सम्मान दिखाकर और परमेश्वर के सारे हथियार पहनकर और लगातार कलीसिया में बने रहकर बुराई की शक्तियों के सामने स्थिर रहकर समझदारी से चलने को कहा और उसने जोर दिया कि परमेश्वर ने इफिसियों का केवल उद्धार ही नहीं किया बल्कि उन्हें बुराई की

शक्तिशाली सेनाओं के ऊपर विजयी होने के लिए आवश्यक संसाधन भी दिए (5:15—6:20)।

अपने पत्र को समाप्त करते हुए उसने कुछ व्यक्तिगत अभिवादन जोड़ दिए। उसने भाइयों के मनों को तसल्ली देने के लिए अपनी ताज़ा स्थिति भी बता दी।

पौलुस की परिस्थितियों का समाचार (6:21, 22)

[21]और तुखिकुस जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब बातें बताएगा, कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं।

[22]उसे मैं ने तुम्हारे पास इसी लिए भेजा है, कि तुम हमारी दशा को जानो, और वह तुम्हारे मनों को शान्ति दे।

आयतें 21, 22. पौलुस ने अपने पाठकों को रोम में कैदी के रूप में अपनी स्थिति का आश्वासन दिए बिना अपने पत्र को समाप्त नहीं किया। प्रेरित की उन्हें अपने बारे में बताने की इच्छा कि उसके साथ क्या चल रहा है और उनकी उसके बारे में जानने की इच्छा स्पष्ट रूप में पौलुस और इफिसियों के बीच पाए जाने वाले निकट सम्बन्ध और आपसी प्रेम के बारे में बताती है।

अपने पहले रोमी कारावास के दौरान पौलुस ने इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पत्र लिखे थे। कभी-कभी उसके कारावास के दौरान उसके मित्र उसके साथ थे। फिलिप्पियों में उसने तीमुथियुस और इपफ्रुदितुस, कुछ अनाम ''भाइयों'' और ''कैसर के घराने के पवित्र लोगों'' की बात की (1:1; 2:19-30; 4:18, 21-23)। फिलेमोन के नाम अपने पत्र में उसने तीमुथियुस, उनेसिमुस, इपफ्रास, मरकुस, देमास, लूका और अरिस्तर्खुस का उल्लेख किया (आयतें 1, 10, 23, 24)। इफिसियों के नाम पत्र में केवल **तुखिकुस** का नाम है। कुलुस्सियों में तीमुथियुस, तुखिकुस, उनेसिमुस, अरिस्तर्खुस, मरकुस, युसबियुस, इपफ्रास, लूका और देमास के नाम हैं (1:1; 4:7, 9-12, 14)। उपलब्ध जानकारी से ऐसा लगता है कि इफिसियों (6:21, 22), कुलुस्सियों (4:7-9) और फिलेमोन (आयतें 10-12) और वह पत्र तुखिकुस और उनेसिमुस ने पहुंचाए, जबकि फिलिप्पियों को पौलुस का संदेश इपफ्रुदीतुस ने पहुंचाया (2:25-30)।

पौलुस ने इफिसियों के पास तुखिकुस को भेजा **कि तुम भी मेरी दशा जानो ...। कि तुम हमारी दशा जानो जिससे तुम्हारे मनों को शान्ति दे।** तुखिकुस को पौलुस द्वारा **प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक** बताया गया जो इस बात का संकेत है कि पत्र पहुंचाने और सच्चाई बताने पर उस पर भरोसा किया जा सकता था।

शान्ति और अनुग्रह के अभिवादन (6:23, 24)

[23]परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले। [24]जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे।

आयतें 23, 24. पत्र की समाप्ति पौलुस की अन्य पत्रियों की समाप्तियों जैसी ही है। जिस

प्रकार से इस पत्र का आरम्भ उसने ''हमारे पिता परमेश्वर और परमेश्वर यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति'' की प्रार्थना के साथ किया उसी प्रकार उसे उसने पत्र की समाप्ति **शान्ति और अनुग्रह** के विचारों के साथ किया। परमेश्वर के अनुग्रह से संसार में उद्धार आया है (2:8, 9) और परमेश्वर के अनुग्रह के दान को स्वीकार करने से मसीही लोगों को शान्ति मिलती है (2:13-22)। मसीह में परमेश्वर द्वारा दिखाए गए अनुग्रह और शान्ति को सही ढंग से ग्रहण करना **प्रेम** और **विश्वास** की बात है। इस वचन से संकेत मिलता है कि प्रेम और विश्वास **परमेश्वर** की ओर से दिए जाते हैं। पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर का अनुग्रह और कृपा उन लोगों के साथ ही हो जो **मसीह** से प्रेम करते हैं।

इस पत्र में और कहीं बताया गया विश्वास को स्वीकार करना (1:15; 2:8; 3:12, 17; 4:13; 6:16) यकीन, भरोसे और आज्ञापालन का उत्तर ही होना चाहिए। नहीं तो यह एक मुर्दा विश्वास है (देखें याकूब 2:13)। प्रेम मसीही लोगों को प्रभु की इच्छा पूरी करने को प्रेरित करता है (देखें यूहन्ना 14:15; 2 कुरिन्थियों 5:14)।

आयत 24 के तीन शब्दों **सच्चा प्रेम रखते** पर कुछ ध्यान दिया जाना चाहिए। ''प्रेम'' शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। संज्ञा शब्द *aphtharsia* ''अनश्वरता''[1] की बात करता है। रोमियों 2:7 में सनातन महिमा और अनन्त जीवन की महिमा के लिए ''अमरता'' शब्द दिया गया है। 1 कुरिन्थियों 15:42, 50, 53, 54 में यह जी उठी देह के ''अविनाशी होने'' के संकल्प में है (NKJV) और 2 कुरिन्थियों 1:10 में यह उस ''अमरता'' की बात करता है जिसे सुसमाचार के द्वारा मसीह प्रकाश में लाया। पौलुस के *aphtharsia* के इस्तेमाल की कोई बात नहीं जिसे ''सच्चाई'' अनुवाद करने को उचित नहीं ठहराती (जैसा कि KJV और NKJV में मिलता है)।

''अविनाशी गुण'' जिसकी पौलुस ने बात की है परमेश्वर की अमरता का विवरण नहीं है, न ही यह ''अनुग्रह'' के अमर स्वभाव की व्यावख्या करता है। न ही यह विश्वासी मसीही लोगों को दिए जाने वाले अनन्त जीवन की बात करता है। बल्कि स्थायीत्व की इस अवधारणा को ''प्रेम'' से जोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि यह बेहतरीन ''ढंग से परिभाषित करता है जिसमें [मसीही] प्रेम, या वह तत्व जिसमें उनके प्रेम का अस्तित्व है। यह वह प्रेम है जो 'न तो बदलाव को ... न सड़ाव को जानता है।''[2] वे सब लोग जो ''हमारे प्रभु यीशु मसीह से अविनाशी प्रेम से प्रेम करते हैं,'' वह प्रेम जो न तो बदलाव और न लगाव जानता है, परमेश्वर के अनुग्रह को पाने वाले हैं।

प्रासंगिकता

अज्ञात नायक (6:21-24)

इफिसियों के नाम अपने पत्र में पौलुस का आशीष वचन उसकी अन्य पत्रियों के आशीष वचनों जैसा है, जिसमें कलीसिया में उसके कुछ सहकर्मियों का नाम है। इन आशीष वचनों से सुसमाचार के अज्ञात नायकों अर्थात उन लोगों का ध्यान आता है जिन्होंने सुसमाचार को संसार में ले जाने के लिए प्रभावशाली ढंग से और वफ़ादारी से बिना पहचान के काम किया।

विश्वास के नायकों का पवित्र शास्त्र में आम तौर पर नाम नहीं दिया गया होता। प्रेरितों

11:19-26 में पहली बार मानवीय पहल से अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाया गया था। फिलिप्पुस ने पहले सामरियों को वचन सुनाया था परन्तु वे आंशिक यहूदी थे। पतरस ने एक अन्यजाति कुरनेलियुस को वचन सुनाया था परन्तु वह परमेश्वर की पहल के साथ हुआ था। प्रेरितों 11 में नवजात कलीसिया में होने वाली सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक को देखते हैं जिसमें अन्ताकिया में अन्यजातियों के पास सुसमाचार गया था और वहां स्थापित हुई कलीसिया से पौलुस ने तीन बड़ी मिशनरी यात्राएं आरम्भ कीं, जिससे सुसमाचार सारे रोमी संसार में ले जाया गया। परन्तु जिन लोगों ने काम किया था उनका नाम कभी नहीं दिया गया।

मसीह में बहुत से भाइयों और बहनों ने पौलुस की सहायता की। जेल की पत्रियों अर्थात इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन ने उस में एक दर्जन सहकर्मियों का नाम लिया जो उसके और मसीह के काम के लिए महत्वपूर्ण थे। उनके बारे में हमें बहुत कम बताया गया है, परन्तु हम जानते हैं कि वे प्रभु के लिए अपने काम में पौलुस के लिए सहायक थे।

मसीह की ''देह'' होने के रूप में कलीसिया का उदाहरण (रोमियों 12; 1 कुरिन्थियों 12) दिखाता है कि देह के सभी अंग प्रसिद्ध नहीं है। कलीसिया में सेवा करते हुए मसीही लोगों को याद रखना चाहिए कि देह सही ढंग से तभी काम करती है, जब हर अंग अपना-अपना काम करे (4:16)। हम में से सभी लोगों का नाम सुर्खियों में नहीं आएगा या दूसरों द्वारा याद नहीं किया जाएगा, परन्तु हम सब के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं, और परमेश्वर द्वारा याद रखे जाएंगे। हम सभी तुखिकुसों के लिए अर्थात उन लोगों के लिए जो पौलुस की सहायता करते हैं धन्यवाद करते हैं। जब हम मिलकर काम करते हैं, चाहे वह मोर्चे पर सामने हो या परछाई में, परमेश्वर द्वारा हम सब को आशीष मिलती है, और उसके राज्य का काम पूरा होता है।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 467; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000),155 भी देखें। [2]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:395-96 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस''; सैलमण्ड चार्ल्स जॉन इलिकोट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द इफिसियंस: विद ए क्रिटिकल एंड ग्रामेटिकल कमैंट्री, एंड ए रिवाइज़्ड ट्रांसलेशन,* 5वां संस्क. (लंदन: लॉन्गमैंस, ग्रीन एंड कं., 1884), 159.